ग्रन्थमाला 'धर्माचरण' : खण्ड १

# सोलह संस्कार

## संस्कारोंका अध्यात्मशास्त्रीय आधार समझें !

हिन्दी (Hindi)


**संकलनकर्ता**

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाकी उद्घोषणा करनेवाले

**सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले**

**पू. संदीप गजानन आळशी**



**सनातन संस्था**


सितंबर २०२३ तक सनातनके ३१९ ग्रन्थोंकी हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड, तमिल, तेलुगु, मलयालम, बांग्ला, ओडिया, पंजाबी, असमिया, सर्बियन, जर्मन, नेपाली, स्पैनिश, फ्रांसीसी, इन १७ भाषाओंमें ९४ लाख ३५ सहस्र प्रतियां !

## ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

## सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

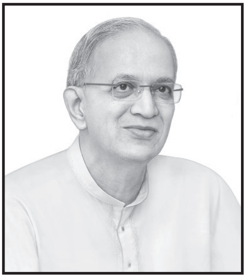

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे ३.९.२०२३ तक १२५ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४६ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – **www.Sanatan.org**)

### सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।<br>
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥<br>
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।<br>
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ – जयंत बाळाजी आठवले<br>
१७.५.१९९८

## पू. संदीप आळशी

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इ. के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र व धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

## ग्रन्थकी अनुक्रमणिका


| | |
|---|---|
| 卐 ग्रन्थकी भूमिका | ८ |
| अध्याय १. व्युत्पत्ति, अर्थ एवं महत्त्व | ९ |
| अध्याय २. संस्कार किसके एवं कैसे करें ? | १७ |
| अध्याय ३. सोलह संस्कारोंके आधारविधि | २१ |
| अध्याय ४. संस्कार क्र. १ : गर्भाधान (ऋतुशान्ति) | ३० |
| अध्याय ५. संस्कार क्र. २ से ४ : पुंसवन, सीमन्तोन्नयन व जातकर्म | ३६ |
| अध्याय ६. संस्कार क्र. ५ : नामकरण | ४१ |
| ६ अ. उद्देश्य | ४१ |
| ६ आ. जन्मनाम व व्यावहारिक नाम | ४१ |
| ६ इ. नामकरणका संकल्प एवं विधि | ४१ |
| ६ ई. नामका चयन | ४२ |
| ६ उ. नामोंके प्रकार | ४४ |
| ६ ऊ. अध्यात्मशास्त्रानुसार नाम | ४७ |
| ६ ए. विधि एवं चार नाम | ४७ |
| ६ ऐ. कन्याका नामकरण | ४८ |
| अध्याय ७. संस्कार क्र. ६ से ८ : निष्क्रमण, अन्नप्राशन व चौलकर्म | ४९ |
| अध्याय ८. संस्कार क्र ९ : उपनयन (व्रतबन्ध) | ५३ |

अध्याय ९. संस्कार क्र. १० से १४ : मेधाजनन, महानाम्नीव्रत, महाव्रत, उपनिषद्व्रत एवं गोदानव्रत ७०

अध्याय १०. संस्कार क्र. १५ : समावर्तन ७३

अध्याय ११. संस्कार क्र. १६ : विवाह ७५

११ अ. अर्थ एवं समानार्थी शब्द ७५

११ आ. उद्देश्य एवं महत्त्व ७५

११ इ. प्रकार ७६

११ ई. विवाह निश्चित करना ७७

११ उ. वाग्दान (वाङ्निश्चय) ७८

११ ऊ. मुहूर्तनिश्चय एवं समधिभोजन ७८

११ ए. विवाहपूर्वविधि ७८

११ ऐ. विवाहपूर्वदिन कृत्य ७९

११ ओ. विवाह दिन ७९

११ औ. विवाहदिनोत्तर विधि ८९

११ अं. विवाह संस्कारद्वारा वर-वधूका परस्पर एकरूप होना ८९

११ क. समाजमें फैली अनैतिकतासे परिवार-संस्था नष्ट होनेका भय ९०

अध्याय १२. 'विवाहसंस्कार'सम्बन्धी आलोचना एवं अनुचित विचारोंका खण्डन ९१

卐 प्रस्तुत ग्रन्थकी असामान्यता समझ लें ! ९८

卐 संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी १०१

आनन्दप्राप्ति हेतु सनातनका साधनासम्बन्धी ग्रन्थ

**साधना (सामान्य विवेचन एवं महत्त्व)**

# ग्रन्थकी भूमिका

धर्म सिखाता है कि मनुष्यजन्म ईश्वरप्राप्तिके लिए है; इसलिए जन्मसे लेकर मृत्युतक प्रत्येक प्रसंगमें ईश्वरके निकट पहुंचनेके लिए आवश्यक उपासना कैसे की जाए, इसका मार्गदर्शन धर्मशास्त्रमें किया गया है । जन्मसे लेकर विवाहतक जीवनका एक चक्र पूर्ण होता है । उसी प्रकारका चक्र पुत्रके / कन्याके जन्मसे उसके विवाहतक चलता है । पीढी-दर-पीढी ऐसा चलता रहता है । गर्भधारणसे विवाहतकके कालमें जीवनके प्रमुख सोलह प्रसंगोंमें, ईश्वरके निकट पहुंचने हेतु कौनसे संस्कार करने चाहिए, इसका ज्ञान इस ग्रन्थमें दिया गया है । इन संस्कारोंके कारण आगे चलकर उपासना उत्तम होने लगती है । संस्कार कैसे करें, इसकी जानकारी ग्रन्थके अन्तमें उल्लेखित सन्दर्भग्रन्थोंसे ली गई है । संस्कारोंके अन्तर्गत आनेवाली प्रत्येक विधि कैसे करनी चाहिए, इसका विस्तृत विवेचन करनेकी अपेक्षा अमुक विधि अमुक पद्धतिसे क्यों करनी चाहिए, इसकी मूल अध्यात्मशास्त्रीय कारणमीमांसा प्रस्तुत करनेपर बल दिया है । इससे संस्कारोंका मूल शास्त्र समझनेमें सहायता होगी । वर्ण, जाति, उपजाति इत्यादि संस्कारोंकी विधियोंमें कुछ मात्रामें पाठभेद होगा; परन्तु उससे विधिका मूल शास्त्र समझनेमें कोई कठिनाई नहीं होगी । कुछ लोग मृत्युके उपरान्तके संस्कारोंकी भी सोलह संस्कारोंमें ही गणना करते हैं । उन संस्कारोंकी जानकारी सनातनके लघुग्रन्थ 'मृत्युपरान्तके शास्त्रोक्त क्रियाकर्म'में दी गई है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि आजके बुद्धिप्रधान कालमें भी संस्कार एवं अन्य विधियोंके मूल शास्त्रको जानकर, उसके अनुसार आचरण कर, ईश्वरके अधिकाधिक निकट जानेका प्रयत्न सभी करें । – **संकलनकर्ता**

('अध्यात्मशास्त्र' ग्रन्थमालाके सभी खण्डोंकी संयुक्त भूमिका 'धर्मका मूलभूत विवेचन' इस ग्रन्थके अन्तर्गत दी है ।)